RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

गांधीवादी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर

हेमा शुक्ला

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 05 August 2017
Accepted: 10 Sep 2017
Published Online: 15 Sep 2017

ABSTRACT

प्रगतिशील विचार धारा रखने वाले चरित्रों के माध्यम से विष्णु जी ने जहॉं जाति—पॉति, छुआ—छुत, दहेज प्रथा आदि का खुलकर विरोध किया है वहीं आर्य समाज के माध्यम से ऐसी तमाम सामाजिक समस्यायों को हल करने का सुझाव भी दिया है ।

प्रगतिवादी विचारधारा वाले ये चरित्र स्त्री—पुरूष विभेद को भी अच्छा नहीं मानते बल्कि कमला, विभा तथा अलका जैसी नारियों के माध्यम से सामाजिक बुराईयों को तोड़ने व उसका खुलकर विरोध करने की बात की है और ये स्त्रियॉं बड़े ही साहस के साथ तमाम बुराईयों का भी विरोध करती हैं।

प्रयोजन :

प्रगतीशील विचारधारा वाले पात्रों की भॉंति ही विष्णु जी ने गॉंधीवादी विचारों से प्रभावित पात्रों की भी सृष्टि की है जिसमें — पं.मेलाराम,कुमार,अलका के पति, पं.रामदास तथा निशिकांत जैसे पात्रों का दिगदर्शन होता है । ये गांधीवादी पात्र देश की कौमी एकता के लिए खद्दर पहनते हैं, देशसेवा, हिंदू—मुस्लिम एकता, भाईचारा आदि की बात करते हैं।

गांधी युगीन उपन्यासों में पात्रों की योजना ग्रामीण और शहरी—जीवन लिए हुए है। गॉंधीवादी विचारधारा ने ग्रामीण जीवन की करूण स्थिति से उबारने का मार्ग दिया है। अत: इस ग्रामीण जीवन की समस्याऍं जिनके आसपास घिरी हैं ऐसे किसानों, व्यक्तियों, नौजवानों तथा साधारण मनुष्यों, पीड़ित शोषित पात्रों,उनका शोषण करने वाले साहूकार, जमींदार और पूॅंजीवादी व्यवस्था के पोषक पात्रों की योजना की गई है।

नारियों को घर की चार दीवारी की, केवल पुरूष की वासना को तृप्त करने का एक मात्र साधन समझा जाता है। इसलिए एक बाजारू वस्तु के रूप में चाहे उसका अनमेल विवाह हो, दहेज की जाल, उसके लिए फांसी का फंदा, वेश्या के रूप में पारम्परकि सामाजिक व्यवस्था के शोषण का भोग बनना पड़ा है। नारी यहॉं तक विवश की जाती है कि उसे पूर्ण जीवन गुलामी में बिताना होता ळें

प्रस्तावना :

विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में गॉंधी विचारधारा का पल्लवन इस प्रकार से किया गया है कि उपन्यास के पात्रों के सामने जिस समस्या का जाल बिछा है, उसमें से छूटना चाहते हैं। और गॉंधीवादी मूल्यों के रूप में सर्व हितकर ऐसे उदात्त मूल्यों कीस्थापना करते हैं। इसलिए युगीन उपन्यासकारों ने भी पात्रों के सम्मुख किसी न किसी प्रकार का लक्ष्य आदर्श रखा है। उसकी ओर अपने कृतित्व से वह गमन करते हैं, जिसमें उनकी समस्यायों का समाधान हो।

पात्रों का सुधारवादी दृष्टिकोण उनका जीवनादर्श है, जिसके तहत सामाजिक रीति—रिवाजों, परम्पराओं जैसे कि अनमेल विवाह, दहेज की समस्या विधवाओं, वेश्यायों का पुन: समाज में स्वीकार हो, पारिवारिक रूप में टूटती भावनाओं को नई—पुरानी पीढ़ी के अंतर को कम करने तथा सामाजिक रूप से रचनात्मक या सुधार करके एक सुव्यवस्थित समाज रचना करने की ओर बढ़ते हैं।

'गांधीवादी विचारधारा के प्रति' विषय में डॉं. नवीन कलार्थी कहते हैं—'' उपन्यासकार समाज के प्रति उत्तरदायित्व पूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपितु उपन्यास—सृजन का लक्ष्य आदर्शवाद रहा है। गांधीवादी विचारधारा ने अनुकूल आश्रमों की नींव रखकर आश्रमी जीवन जीना, कल्याण ग्रामों की रचना द्वारा उत्थान—विकास करना सत्य अहिंसा के मूल्यों की जीत न्यायी पक्ष का समर्थन किया है। पारिवारिक प्रसंगादि में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना, आदर्श दाम्पत्य जीवन, नारियों के जीवन की उदात्रता को चित्रण में लक्ष्य किया है। उसी प्रकार समाज—जीवन में पीड़ित शोषित, मध्यमवर्गीय समस्यायों का समाधान उपन्यास में आदर्शरूप में अंकित किया है। मद्यनिषेध दहेज समस्या, वेश्यायों का जीवन परिवर्तन, राष्ट्रीय भावना के रूप में एकता की भावना आदि में गॉंधीवादी विचारधारा से प्रभावित

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

मूल्यों की स्थापना की गई है। अत: गांधीवाद का यह आदर्श रहा है..।

युगीन उपन्यासों में पीड़ित शोषित पात्र का अधिकतम चित्रण उपलब्ध होता है। गॉधीवादी विचारधारा मूलत: अहिंसा की बुनियाद पर समाजवाद स्थापित करती है। तथापि समाज में समता, उपेक्षितता आदि परिस्थितियों का विकास करना चाहा। उन परिस्थितियों में जीने वाले लोगो का सहयोग चाहा है। राष्ट्रीय एकता हेतु, सामाजिक संतुलन हेतु, तथा आर्थिक विषमता को संतुलित करने का प्रयास है। गॉधीवादी विचारधारा के मुताबिक पीड़ितों, शोषितों के प्रति सहानुभूति है। समानता के समाजवादी मूल्यों के द्वारा नये समाज का गांधीजी का निजी दृष्टिकोण है।''[१]

समाजवादी समानतावादी विचारधारा का आदर्श कुछ पात्रों का है, पूॅजीवादी जमींदार, साहूकारों या समाज के उच्चवर्ग द्वारा पीड़ित, शोषित,पतित किसान मजदूर आदि का शोषण किया गया है। तथापि जीवनभर गुलाम बने रहने की, या कर्म के प्रति पलायनवादिता जैसी परिस्थितियों को विकसित करते रहते है। उनसे छुटकारा पाकर समाजवादी समानता की पृष्ठभूमि पर समाज व्यवस्था हो, ऐसा कृतित्व है। किसी को भूखा प्यासा सोने की नौबत न आये, इस व्यवस्था का प्रयोजन पात्रों के आदर्श में प्रस्तुत किया गया है। विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में अनेक ऐसे पात्रों की बहुलता दिखाई देती है जिनके कार्यो, व्यक्तित्वों व आदर्शों से स्वंय गांधीवादी विचारधारा प्रकट होती है।

सामाजिक परम्पराओं के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना टूट रही है उसको बचाने के लिए बाबा रामदास, निशिकान्त, सुमिता, अमीयदास, कुमार, तुषार, नीलम, अलका के पति, यशोदा, पल्लवी के दादाजी, अनित्य, सुमति, दीपू, आशुतोष, जैसे स्त्री—पुरूष पात्रों में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिग्दर्शित होता है।

निशिकांत—गॉधीवादी विचारों से प्रेरित 'निशिकांत' उपन्यास का नायक निशिकांत आर्य समाजी होने के साथ—साथ स्वभाव में शांत और साहसी तथा निडर प्रवृत्ति का युवक है।दफ्तर में क्लर्क के पद पर प्रतिष्ठित निशिकांत सरकारी नौकर होते हुए भी खद्दर पहनता है। उसका यह मानना है, कि वह सरकारी नौकरी छोड़ सकता है किन्तु खद्दर पहनना नहीं छोड़ सकता। बड़े ही आत्ममंथन के पश्चात निशिकांत प्रतिज्ञा करता है—'' खद्दर पहनूॅगा, अछूतों को अपने समान मानूॅगा, राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा करूॅगा, हिन्दू—मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्न करूॅगा . ..... और वह सत्याग्रही बंधुओं से खुलकर मिलने लगा। उन्हें वह अपने घर बुला लाता और घंण्टों उनसे बहस करता।''[२]

निशिकांत सरकारी नौकरी अपनी आर्थिक विवशता को दुर करने के लिए करता है। यदि वह आर्थिक रूप से मजबूत होता तो कभी भी सरकार की गुलामी नहीं करता। अपने देश की गुलामी की छटपटाहट को वह बहुत ही शिद्दत से महसूस करता है। वह अपने हृदय की व्यथा को अभिव्यक्ति देते हुए कहता है मैं अपने देश को प्रेम करता हूॅ। मैं उसकी आजादी के लिए मर मिटना चाहता हूॅ।

निशिकांत में जहॉ निडरता, साहस, प्रेम जैसे पवित्र गुण दिखाई देते हैं वही पलायनवादिता व कुछ बातों को समाज में खुलकर न कह पाने की प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है।निशिकांत के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह ''संयमी बौध्दिक, कर्मठ एवं संवेदनशील होते हुए कायर और नपुंसक बना रहता है। स्थान—स्थान पर वह अपनी कायरता का परिचय देता है। लेखक का सपना है कि सभी प्रेम—विवाह जाति—पाति या धर्म के बंधनों से निरपेक्ष होकर किए जाएॅ। इसी सपने को उसने अपने लेखक नायक के हवाले से संजोया है। —'' सुरैया—सुरैया रहकर मेरी पत्नी होगी, अन्यथा नहीं। सुमित्रा और सावित्री मेरी जाति में कम नहीं है शुध्दि को मैं प्रेम का अपमान समझता हूॅ।''[३]

लेकिन यथार्थ में यही कांत सुरैया तो सुरैया अपने से निम्न जाति की विधवा कमला तक से दूर—दूर भागता रहता है क्योंकि उसे भय है कि उसकी संस्कारी मॉ कमला को पुत्र वधु के रूप में स्वीकार नहीं कर पायेगी। निशिकांत कहता बहुत कुछ है किन्तु यथार्थ में कर कुछ नहीं पाता है। जाति, धर्म सम्प्रदाय,अस्पृश्यता, एवं निर्धनता के प्रति उसमें गहरी चिंता है। उसके अवसाद ने उसे ग्रस लिया है। निशिकांत एक तार्किक बुध्दिजीवी, भीरू नायक के रूप में दिखाई देता है जो आर्य समाज के स्कूल से चरित्र पर संदेह होने के कारण निकाली गई कमला के कारण स्वयं भी स्कूल से त्यागपत्र दे देता है किन्तु यह कहने का साहस नहीं जुटा पाता है कि कमला निर्दोष है। बल्कि त्याग पत्र देते हुए साहस के साथ कहता है—'' मैं आपका कृतज्ञ हूॅ। पर मेरी कुछ मान्यताएॅ ऐसी हैं जिनके रहते में स्वतंत्र होकर काम नहीं कर सकता। अपनी शक्ति को मै जानता हूॅ। संस्था से अलग होने में मेरा और संस्था.......... दोनों का कल्याण है।''[४]

वास्तव में निशिकांत का चरित्र कीचड़ में कमल की तरह दैदीप्यमान है। वह अपने कर्तव्य—पथ पर अडिग है। कोई भी वातावरण व परिस्थिति उसे विचलित नहीं कर पाती । मानसिक, सामाजिक, निर्णय लेने में उसमें साहस की कमी दिखाई देती है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वह सोचता तो बहुत कुछ है किन्तु उसे पूर्ण करने की स्थिति में नहीं आ पाता है। यहॉ तक कि जब सुरैया मुस्लिम से हिंन्दू बनने को राजी है और कांत की मॉ भी राजी हो जाती है तो भी निशिकांत बहुत सोचता है उसकी ऐसी दशा देखकर मंत्री महोदय भी कहते हैं—''कान्त! तुम्हारा साहस धन्य है। मैं तुम्हे बधाई देता हूॅ। पर कान्त, अब तुम उसको शुध्द कर लो । वह तुम्हारी है। तुम हिन्दू हो। उसे भी हिन्दू होना चाहिए।''[५]

इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता है कि उपन्यास का नायक निशिकांत है किन्तु उसे मृत रूढ़ियों से मुक्ति दिलानेवाली कमला है। कमला ही निशिकांत को समझाती है कि, संस्कारों की दासता से मुक्ति के लिए विद्रोह आवश्यक है। यही नहीं कमला निशिकांत के अंतर्मन को उद्वेलित करते हुए कहती है—'' आप इतना लिखते हैं। क्या है,क्या होना चाहिए, सब कुछ बताते हैं। क्रांति आपको प्रिय है, पर ये बातें आपके जीवन में कहीं नहीं। छाया भी नहीं, क्यों।'' निशिकांत सर्वधर्म समभाव रखता है, एक अच्छा वक्ता है किन्तु समय के साथ अपनी बात कहने में असमर्थ दिखाई देनेवाले गांधीवादी नायक के रूप में दिखाई देता है।

प.मेलाराम 'निशिकांत' उपन्यास के एक गॉधीवादी पुरूष पात्र के रूप में दिखाई देते हैं जिसका जीवन सादगी व साहस से ओतप्रोत दिखाई देता है। धर्म,राजनीति, व सांप्रदायिकता पर पं.मेलाराम का विचार बड़े ही प्रभावी ढंग से लोगों के सामने मुखर हुआ है। पं.मेलाराम सत्य को सबसे बड़ा हथियार मानते हैं और खुलकर ऐसे लोगों के प्रति कुछ भी करने की बात करते हुए कहते हैं— ''भाई तुम्हारे लिए मैं सब कुछ कर सकता हूॅ। क्योंकि मैं जानता हूॅ, तुम सच्चे आदमी हो, पर भगवान मेरा जाने, तुम्हारे अन्दर भी एक कमी है। तुम राम नाम की वास्तविक महिमा नहीं जानते।''

पं.मेलाराम सर्वधर्म समभाव रखते हैं, किसी भी धर्म को उॅच या नीच नहीं समझते, सभी के प्रति श्रध्दा रखते हैं, इसी कारण अछूत लोगों को भी सम्मान देते हैं और सुधार आदि की बात को ढोंग मानते हुए कहते हैं—'' देखो कान्त तुम लोग अपने को बड़ा विद्वान समझते हो। पर क्या कहूॅ, भगवान मेरा जाने असलियत को बिलकुल नहीं समझते। मैं पूछता हूॅ क्या तुम समझते हो कि तुमउनमें मेल करा सकते हो? कभी नहीं, हिंन्दू लोग पहले अपने में मेल तो कर लें। भगवान मेरा जाने हमलोग अछूतों को किस बुरी तरह से दुरदुराते हैं। हम जब तक उनको नहीं अपनाते तब तक मुसलमानों की बात करना अपने को धोखा देना हैं। अपना घर ठीक करो। हिन्दुओं को एक स्तर पर लाओ। उनके भीतर का डर निकालो । भगवान मेरा जाने कान्त बाबू, हम डरते हैं तभी पाप करते हैं। सुधार—उधार सब ढोंग है। एक बार तुम्हें क्या बताऊॅ, दो —तीन भंगियों को लेकर मैं समाज मंदिर में गया, पूछा,'क्या आप इनके हाथ का खा सकते हैं? सुनकर सब बॅगले झांकने लगे कहने और करनेमें बड़ा अन्तर है।''[६]

पं.मेलाराम शुध्दि आदि को व्यर्थ मानते हैं उनके अनुसार मानव सेवा ही सच्ची सेवा है। इतना ही नही पंडितजी गॉधीवादी कुमार की प्रशंसा करते हैं, और उसे कॉग्रेस मैन कहते हुए कहते हैं—''बड़ी खुशी की बात है। वह कॉग्रेसमैन है। मैं भी कॉग्रेसमैन हूॅ। सभी हिन्दुस्तानी कॉग्रेसी हैं, पर वह गांधी भक्त भी है। क्यों भाई तुम भी गांधी—भक्त हो?''

पं.मेलाराम सरकारी नौकरी करने वाले लोगों से नौकरी न करने के लिए कहते हैं, और निशिकांत को भी वे सरकारी नौकरी छोड़कर आंदोलन करने की सलाह देते हैं। इतना ही नहीं बल्कि विदेशी वस्तुओं के प्रति बहिष्कार व विदेशी अधिकारियों के प्रति स्वामी भक्ति को बुरा मानते हैं। स्वधर्म व स्वदेशी के प्रति भक्ति भाव रखते हैं। उनके इस बात से यह पता चलता है कि पंडितजी स्वधर्म के प्रति कितना अपनापन रखते हैं। निशिकांत जब दो—दो दिन तक सरकारी कार्यकाज में ही लगा रहता है तब पंडितजी उसे समझाते हुए कहते हैं—'' देखो भाई! तुम आत्महत्या कर रहे हो। कोई बात है कि तीन—तीन दिन तक दफ्तर में पड़ें रहते हो। वे तुम्हारे जीवन को नष्ट करने वाले कौन होते हैं? क्या अधिकार है उन्हें तुम्हारी आत्मा को कुचल देने का? भगवान मेरा जाने इतनी सेवा देश की करो तो क्या देश गुलाम बना रहे? हम अपने भाई का गला काटते हैं और विदेशी प्रभुओं के तलुए चाटते हैं, क्योंकि वे स्वामी हैं। लेकिन मैं कहता हूॅ विदेशी स्वामी कभी ईमानदार नहीं होता और जो ईमानदार होने का दावा करते हैं वे या तो ढोंगी हैं या विमूढ़ या फिर स्वामिभक्त कुत्ते।''[७]

पंडितजी विदेशियों के ऊपर तनिक भी विश्वास नहीं करते वे उन्हें हमेशा ही विश्वास घाती के रूप में ही देखते हैं। इतना ही नहीं बल्कि पंडितजी निशिकांत को संस्कारों की दासता से मुक्ति पाने के लिए विद्रोह करने की भी सलाह देते हैं। दासता को पाप, घृणित तथा अतिनिन्दनीय कहते—हुए उसे नष्ट करने की बात कहते हैं।

इस प्रकार पं.मेलाराम के विषय में निष्कर्षगत रूप में कहा जा सकता है कि मेलारामजी गॉधीवादी नायक के रूप में दिखाई देते हैं, इनके विचार सख्त एवं तल्ख रूप में व्यक्त हुए हैं। जो मानव सेवा को सच्चे रूपों में ईश्वर की सच्ची सेवा

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

मानते हैं और गुलामी या दासता को सबसे निम्न प्रवृत्ति कहते हुए उसके प्रति विद्रोह की बात करते हैं । छुआ—छूत, उँचनीच, अमीर— गरीब आदि भेदभाव को महत्व न देनेवाले नायक के रूप में पं. मेलाराम जाने जाते हैं।

गांधीवादी विचारों से प्रेरित कुमार कथा नायक निशिकांत का परम मित्र है। महान सत्याग्रही कुमार का व्यक्तिगत जीवन अनेक प्रकार के संघर्षो व कष्टों से भरा पड़ा है।स्वभाव से सहज, सरल व शांतिप्रिय होने के बावजूद भी कुमार सांप्रदायिक ताकतों का शिकार हो जाता है। कुमार अपने कार्यो के प्रति इतना तल्लीन है कि उसे किसी के द्वारा कुछ कहे— जाने की भी चिन्ता नहीं है। इतना ही नहीं कुमार जाति—पात, उँच—नीच और छोटे—बड़े का भेदभाव तनिक भी नहीं मानता हैं, उसकी दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर है, यहॉ तक कि वह भंगियों को भी शुध्द करके उनके हाथ से बनाये गये भोजन को ग्रहण करता है। इस संबंध में पं.मेलाराम भी कुमार की प्रशंसा खुले मन से करता है।

कुमार समाज की परवाह नहीं करता वह महानतम् कार्यो के द्वारा समाज का उध्दार करना चाहता है। भले ही ऐसे कार्यो के बदले उसे समाज से अपमान या घृणा ही क्यों न मिले। कुमार की घायलावस्था में कमला उसकी बड़ी सेवा करती है। निशिकांत के कहने पर कुमार की दवा आदि की व्यवस्था होती है रात —दिन कमला की सेवा सुश्रूषा को कारण ही कुमार की जान बचती है और समाज में कमला व कुमार को लेकर जब गलत अफवाहें जोर पकड़ती हैं तो कुमार ऐसी व्यर्थ अफवाहों पर भी ध्यान नहीं देता है और अपने काम के पूर्ण हो जाने के पश्चात गॉव में जाना चाहता है और हिन्दु— मुस्लिम एकता के लिए काम करना चाहता है। हरिजन आश्रम में रहते हुए वह जाति—पात के भेदभाव को सुलझाना चाहता है इस संबंध में उसका मानवतावादी दृष्टिकोण उभर कर सामने आया है। वह कहता है। अन्ततः कुमार गॉव की ओर प्रयाण करता है और छुआछूत जैसे ऊँचनीच समझे जाने वाले लोगों के बीच रहते हुए उनके प्रश्नों को हल करने की कोशिश करता है तथा गॉव में ही रहना निश्चित करता है और निशिकांत को पत्र लिखकर कहता है कि—''मैंने अब निश्चय कर लिया है कि अब गॉव में रहूँगा और हिन्दू — मुस्लिम प्रश्न की गुत्थी यहीं सुलझ सकती है। छूत—छात होने पर भी यहॉ प्रेंम का अभाव नहीं है। मुझे पं.मेलाराम की याद आती है। उनके दिमाग का कोई पेच ढीला है, पर वे बात पते की कहते हैं। हिन्दू—मुसलमान को मिलते से पहले वे अछूतों को मिलाने पर जोर देते हैं। बात साधारण लगती है, पर उसकी गहराई नापो तो थाह नहीं है। मुझे लगता है कि इसके बिना हिन्दू—मुस्लिम एकता नहीं हो सकेगी ।''[८] गॉधीवादी विचारों से ओतप्रोत नायक कुमार गॉव में रहकर हिन्दू— मुस्लिम एकता के लिए काम करता है। इतना ही नहीं कुमार हरिजन आश्रम में रहते हुए अपना सारा जीवन समाज की भलाई व देशसेवा में लगा देता है।

'स्वप्न' उपन्यास के प्रमुख पात्र अलका के पति गॉधीवादी प्रकृति के होने के कारण कभी भी पूरे उपन्यास में सत्य, अहिंसा, प्रेम व शांति जैसे सद्‌गुणों से विभूषित ही दिखाई देते हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण ही ये अपनी पुरानी सोच रखनेवाली मॉ और आधुनिक सोच से विभूषित क्रांतिकारी काव्यों की रचना करनेवाली पत्नी अलका के मध्य सदैव ही एक विशेष कड़ी बनाकर चलने की कोशिश करते हैं। इनका ध्यान मॉ और पत्नी दोनों के विचारों से बराबर टकराता हैं किन्तु ये किसी को भी नाराज करना नहीं चाहते।

अलका के प्रत्येक कार्य में इनका विशेष सहयोग बराबर रहता है। अलका द्वारा कई कार्य इन्हें बुरा भी लगता है किन्तु ये उसकी तरफ इसलिए अधिक ध्यान नहीं देते हैं कि कहीं वह नाराज न हो जाये। अलका द्वारा क्रांतिकारी विचारों को काव्यरूप में ढालने को लेकर जब काफी नोक झोंक होती है तो ऐसे अवसर पर भी ये अलका से इतना ही कहते हैं कि—'' अलका, मैं रोकने के लिए नहीं हूं। किसलिए हूँ, यह भी अब तक समझ नहीं पाया। बहूत सी बातें मन में उठती है, फिर वही होता है, जो कि तुम चाहती हो। और बुरा भी क्या है? जैसा चलता है उसे चलने दो। जानता हूँ तुम्हें दुःख होता है।''

अलका जब क्रांतिकारियों को प्रेरित करने के लिए काव्य रचना करती है, अतः उसके क्रांतिकारियों से जुड़ने के कारण जब जेल हो जाती है तो ये उसे छुड़ाने के लिए बहुत संघर्ष करते हैं। अलका जेल से छुटने के पश्चात जब गॉव जाना चाहती है तो ये उसे रोकना चाहते हैं किन्तु वह चली जाती है, और ये अपने काम में इतने व्यस्त रहते हैं कि अलका की ओर इनका ध्यानही नहीं जाता है और वह मृत्यु के निकट पहुँच जाती है।

अलका के पति में करूणा,दया अपनेपन की भावना कूट—कूट कर दिखाई देती है, जब अलका की मृत्यु हो जाती है तो ये अलका के अधूरे कार्यों को स्वयं पूरा करना चाहते हैं और स्वंय को ही उसकी मृत्यु का जिम्मेदार भी मानते हैं। अलका के पति की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वे अपनी गलतियों को सहजता से स्वीकार भी करते हैं।

'कोई तो' उपन्यास के गांधीवादी पात्र बाबा रामदास का चरित्र पाठकों के बीच अपनी विशिष्ट छाप छोड़ने में सफल रहा है। बाबा रामदास

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

का असली नाम मुकुंद है। वे एक महाविद्यालय में अध्यापन का कार्य करते हैं। उनकी पत्नी रमा एक कुशल गृहणी है। बाबा रामदास के जीवन में आमूल चूल परिवर्तन उस समय होता है जब वे गांधीवादी विचारों से प्रेरित हो गांधीजी के मुक्ति आंदोलन से जुड़ते हैं। इतना ही नहीं बल्कि गॉधीजी के आवाहन पर बाबा रामदास सरकारी अध्यापक पद को त्याग देते हैं और ब्रहमचर्य व्रत धारण करने का निश्चय करते हैं। उनके ऐसे पवित्र कार्य में उनकी पत्नी भी उनका साथ देती है किन्तु समय बीतने के साथ—साथ उनमें वासना जागृत होती है और वे बाबा रामदास के मित्र गुणाकर त्रिपाठी से शारीरिक संबंध बना लेती है जिससे एक पुत्र जन्म लेता है, जिसे बाबा रामदास अपना बेटा मान लेते हैं।

बाबा रामदास सत्य के उपासक है। अतैव इसी कारण वे अपनी उदारता को अहंकार की संज्ञा—देते हुए कहते हैं—''यह उदारता नहीं थी,यह अहंकार था, क्षमा कर देने का अहंकार। काश, मैं उसे दण्ड दे पाता।''[५१] बाबा रामदास अपनी पत्नी रमा व गुणाकर त्रिपाठी के बने संबंध से पैदा हुए पुत्र को अपना पुत्र मानते हुए उसे लाड़—प्यार करते हैं और अपने स्वत: के जन्मे पुत्र—पुत्री पुनीत और पुलका की तरह 'पवित्र' जैसा सुन्दरतम नाम—देते हैं— '' मैंने जी—जान से उसे अपना लाड—प्यार देने की चेष्टा की। कुछ समय के लिए लगा सब— कुछ सहज है, पर वह स्वयं सहज नहीं हो पा रही थी।

वह एकान्त में होती, देर तक नवजात को छुती रहती। हरेक के सामने जाने से कतराती। शायद इसलिए की आठ वर्ष बाद हुआ था यह बच्चा। पवित्र नाम रखा था मैने उसका वह पवित्र था। अपवित्र थे तो उसके मॉ—बाप। इसीलिए मैं उसे बेहद प्यार करता। बराबर चिन्तित रहता उसको लेकर। पवित्र को दूध दिया समय पर? पवित्र के लिए पालना आया? पवित्र के लिए ....। उपन्यास के गांधीवादी नायक बाबा रामदास गांधीजी के आदशों पर चलने वाले एक ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रारंभ से इति तक अपने जीवन में संघर्ष व द्वंद्व को महत्व देते हैं।

गॉधीवादी और सामंती विचारधारा के चरित्र भी बड़े पैमाने पर दिखाई देते हैं। गॉधीवादी स्त्री—पुरूष पात्र जहॉ अपने सत्कर्मो एवं विचारों से सम्मान पाते हैं वहीं सामंतवादी विचारों से प्रभावित पात्र,—नरेश, बैरिस्टर बुधवार अलका की सास, जैसे पात्र घर—परिवार में अपनी धाक को जमाकर उनपर अनायास ही अपने—विचारों को थोपने का कार्य करते हैं। पुरे समाज में ऐसे पात्रों के प्रति लोग घृणा का भाव रखते हैं। ये पात्र अपने—मान सम्मान एवं दिखावेपन के प्रति इतने अधिक आसक्त हैं कि इन्हें दूसरों को होनेवाली पीड़ा का भी आभास नहीं होता। अहंवादी विचारों से ग्रसित इनका जीवन होता तो दुखमय है किन्तु ये उसे सुखमय होने का मात्र दिखावा करते हैं क्योंकि उनमें आज भी प्राचीन—रूढ़ियों और परंपराओं को मानने, स्वीकारने तथा उसी के अनुसार जीवन जीने की आदत सी हो गयी है। वैसे तो विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में प्रगतिवादी और आदर्शवादी रूप अधिक दिखाई देते हैं किन्तु कुछ स्त्री—पुरूष पात्र ऐसे भी हैं जो'अर्धनारीश्वर' उपन्यास की विभा की तरह समाज की जर्जरित रूढ़ियों को तोड़ने का साहस नहीं जुटा पाती हैं। श्यामला, रामों, ऐसी ही कमजोर रूढिवादी पात्र हैं जो समाज और नियति द्वारा बनाई गई परंपराओं व रूढ़ियों—आडंबरों को मानने के लिए मानों अभिशप्त व विवश हैं।

संदर्भ –

1. हिन्दी—गुजराती उपन्यासों– नवीन कलार्थी –पृष्ठ–२६४—२६५
2. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–४५
3. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–१९३
4. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–१९८
5. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–१७०
6. स्वप्न–विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ–४७
7. स्वप्न–विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ–१२७
8. निशिकान्त–विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ–१७८
9. भारतीय सामंतवाद–रामशरण शर्मा

© RRIJM 2015, All Rights Reserved